IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

उद्धवगीता में 24 गुरुओं की शिक्षाओ का मानव जीवन में उपयोगिता

डॉ. अनुजा रोहिला
असिस्टेंट प्रोफेसर संगीत, श्रीगुरु राम राय वि. वि., देहरादून

शोधसार– उद्धवगीता श्रीकृष्ण और उद्धव के मध्य वह दिव्य संवाद है, जो स्वधामगमन से पूर्व श्रीकृष्ण ने उद्धव को सुनाया। इसमें गुरुरूप में श्रीकृष्ण ने अपने प्रिय सखा उद्धव के शोक और मोह को दूर करने के लिए शिक्षा दी है। उन शिक्षाओं के द्वारा मनुष्य अपना विवेक जागृत करके संसार के मायाजाल से मुक्त हो सकता है। इसमें निहित शिक्षाओं को विभिन्न कथानकों, दृष्टान्तों और आख्यानों के रूप में बताया गया है। सांसारिक विषय–वासनाओं और लोभ–मोह के दावानल से मुक्त होने के लिए इसमें राजा यदु और अवधूत दत्तात्रेय का संवाद अत्यंत शिक्षाप्रद है। इसमें दत्तात्रेय के द्वारा अपनी बुद्धि से बहुत से गुरुओं का आश्रय लेने की बात बतायी गई है। उनके गुरु कोई सिद्ध पुरुष न होकर सामान्यतः अपने परिवेश में पाए जाने वाले प्राणी, पशु आदि थे। जिनसे प्राप्त शिक्षाओं को अपनाकर सांसारिक मोहमाया से मुक्त हुआ जा सकता है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य उद्धवगीता का परिचय कराते हुए उसमें वर्णित उन 24 गुरुओं की शिक्षाओं की विवेचना करना है, जिनका आश्रय लेकर दत्तात्रेय इस संसार में मुक्तभाव से स्वच्छंद विचरते थे।

मुख्यशब्द– उद्धवगीता, गुरु, शिक्षा, विवेकज्ञान।

प्रस्तावना– ब्राह्मणों के शाप के बहाने यदुवंश का संहार कराने का अनुमोदन करके श्रीकृष्ण इस धराधाम को त्यागकर परमधाम जाना चाहते हैं, ऐसा विचारकर उद्धव अत्यंत भाव–विह्वल होकर श्रीकृष्ण के पास आकर एक पल तो क्या आधे क्षण के लिए भी श्रीकृष्ण के चरण–कमलों के वियोग[प] को सहनकर पाने में असमर्थता बताकर उनके धाम जाने का आग्रह करता है। तब श्रीकृष्ण ने उद्धव के सगे–संबंधियों आदि के वियोग से होने वाले शोक–मोह को दूर करने के लिए तथा भागवत भक्तों का कल्याण करने के निमित्त यह दिव्य उपदेश दिया, जिसे उद्धव गीता के नाम से जाना जाता है। उद्धव की स्वतः तत्वज्ञान जानने की जिज्ञासा होने के कारण इसे उद्धवगीता कहा जाता है। यह कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं है, अपितु यह भागवत पुराण के अंतर्गत एकादश स्कंध के सातवें से 29वें तक कुल 23 अध्यायों और 1030 श्लोकों के रूप में समाहित है। जिसकी रचना श्रीकृष्णद्वैपायन वेदव्यास द्वारा की गई है। इसमें भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की त्रिवेणी प्रवाहित है।

राजा यदु जो धन–धान्य से परिपूर्ण होने के बाद भी अशांत थे, उन्होंने दत्तात्रेय से काम और लोभ से मुक्त होने के लिए प्रश्न पूछा[पप], तब दत्तात्रेय ने राजा यदु से कहा कि– मैंने जान लिया है कि सांसारिक जड़–पदार्थों में आनन्द नहीं है। आनन्द बाहर के विषयों में नहीं है, ज्ञान भी बाहर नहीं है। आनन्द एवं ज्ञान

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

मनुष्य की अन्तरात्मा में है। मैंने अपनी दृष्टि को अन्तर्मुख कर लिया है। संसार में रहो, सांसारिक कर्तव्यों को निभाओ, पर अपना ध्यान हमेशा आत्मा में केन्द्रित किये रहो। अपने निजस्वरूप में स्थित रहो। जीवन में दुःख, अवसाद, विषाद आते रहते हैं। इनसे विचलित, उद्विग्न और उदास मत होओ। आत्मा में रमण करते हुए, आत्मचिन्तन में रत रहते हुए जीवन–पथ पर निर्भयता से, प्रसन्नता से आगे बढ़ो। दुःख आने पर रोने बैठोगे तो जीवन यात्रा और दूभर हो जायगी।

मनुष्य अपना चिन्तन बदल ले तो उसका चरित्र और जीवन बदल जाता है। चिन्तन, मनन से बदलता है। संसार को, प्रकृति को ध्यान से देखो। इनमें अनेक ऐसे तत्त्व हैं, जिनको देख–समझकर हम अपने अन्दर के ज्ञान को प्रकट कर सकते हैं। वे तत्त्व, वे घटनाएँ, वे बातें अपने गुणों के विकास में सहायक होती हैं। संसार में छोटी–से–छोटी चीज भी आपको जीवन की बड़ी से बड़ी शिक्षा दे सकती है। जरूरत है तो आपको उसे देखकर, निहारकर सीखने की इच्छा की, अभिलाषा की, जिज्ञासा की। इस जिज्ञासा को जाग्रत करके जीवन–यात्रा के लिये सद्गुणों का अनुपम पाथेय प्राप्त हो जायगा। मैंने अपने जीवन में चौबीस गुरुओं से शिक्षा ली है, जिनसे मेरा जीवन बदल गया है। मैं निश्चिन्त, निर्द्वन्द्व होकर प्रसन्नतापूर्वक संसार में विचरण करता हूँ और जीवन में परम आनन्द, अतीव शान्ति की अनुभूति करता हूँ। मैं आपको उनसे प्राप्त शिक्षा का विवरण बताता हूँ। वे निम्न प्रकार हैं–

(1) **पृथ्वी–** पृथ्वी मेरी पहली गुरु है। मैंने पृथ्वी से उसके धैर्य की, सहनशीलता की, क्षमा की[पपप] और परोपकार की[पअ] शिक्षा ली है। मनुष्य के जीवन में धैर्य, सहनशीलता, उदारता जैसे गुण होंगे तो उसका जीवन शान्ति एवं आनन्द से व्यतीत होगा।

(2) **वायु** – मेरा दूसरा गुरु है–वायु। वायु से मैंने असंगता, निर्लिप्तता[अ] और गतिशीलता सीखी है। वायु से मनुष्य को निर्लिप्त रहना सीखना चाहिये। वायु निरन्तर गतिमान् रहती है। जीवन में गति होनी चाहिये। वायु यदि ठहर जाय, रुक जाय, चलना बन्द कर दे तो जीवन ही समाप्त हो जाय। जीवन चलता रहे, स्वयं का भी और संसार का भी, इसके लिये गतिमान् होना बहुत जरूरी है।

(3) **आकाश–** मेरा तीसरा गुरु है– आकाश। आकाश सर्वत्र व्यापक है।[अप] इससे मैंने यह सीखा कि परमात्मा व्यापक एवं सर्वत्र हैं। जीवन में मान–सम्मान, आशा–निराशा, सुख–दुःख, प्रसाद–विषाद, उत्थान–पतन आते–जाते रहते हैं।

(4) **जलतत्त्व–** जल से मैंने शीतलता, स्निग्धता, पवित्रता एवं मधुरता[अपप] की शिक्षा ली है। मनुष्य को मधुरभाषी और शीतल स्वभावयुक्त होना चाहिये। जल में गतिशीलता है। वह स्थिर नहीं रहता। ऐसे ही मानव–जीवन को गतिशील होना चाहिये। जीवन को जल–जैसा निर्मल, पारदर्शी एवं सभी के जीवन को चैतन्य प्रदान करने वाला बनाना चाहिये, तभी जीवन की सार्थकता है।

(5) **अग्नि–** पाँचवाँ गुरु है– अग्नि। अग्नि से मैंने यह शिक्षा ली है कि जैसे वह तेजस्वी और ज्योतिर्मय[अपपप] होती है, वैसे ही मनुष्य का व्यक्तित्व होना चाहिये। अग्नि को कोई अपने तेज से दबा नहीं सकता। अग्नि की

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

शिखा सदैव उर्ध्वमुखी होती है, उसी प्रकार मनुष्य के व्यक्तित्व एवं सोच की चमक, उसका प्रकाश अग्नि की भाँति सन्मार्गमुखी होना चाहिये।

(6) चन्द्र–छठा गुरु है– चन्द्र। चन्द्रमा न तो घटता है और न बढ़ता है, उसकी कलाएँ घटती–बढ़ती हैं। इससे मैंने यह शिक्षा ली है कि वृद्धि और ह्रास तो शरीर के होते हैं, आत्मा के नहीं।[पग] चन्द्रमा की भाँति मनुष्य को अपनी निजता और स्वरूप को प्रभावित नहीं होने देना चाहिए।

(7) सूर्य– मनुष्य को सूर्य की भाँति परोपकारी होना चाहिये। सूर्य समय पर उगता है, समय पर अस्त होता है। जीवन में ऐसी नियमितता होनी चाहिये। सूर्य आते समय भी मुस्कुराता और अस्त होते समय भी मुस्कुराता है।[ग]

(8) कबूतर– अवधूत ने कबूतर से यह शिक्षा दी है कि मनुष्य को परिवार के प्रति अत्यधिक आसक्ति नहीं रखनी चाहिये। कबूतर पत्नी एवं बच्चों की आसक्ति के कारण मर गया। आज मनुष्य जीवनभर परिवार में इतना उलझा, फँसा रहता है कि उसे जीवन के वास्तविक उद्देश्य, मूल लक्ष्य के बारे में चिन्तन की फुरसत ही नहीं मिलती। परिवार का भरण–पोषण करना और जिम्मेदारी निभाना तो ठीक है। धर्मानुकूल भोग भोगना भी ठीक है, पर सम्पूर्ण जीवन इसी में बिताना उचित नहीं। अपने स्वयं के विकास के लिये, आत्मोत्थान के लिये भी थोड़ा समय निकालना चाहिये।

(9) अजगर– अजगर से मैंने सन्तोष–वृत्ति सीखी। जीवन में अच्छे कर्म करने चाहिये, पर जो प्राप्त हो जाय उससे सन्तोष करना चाहिये। बिना सन्तुष्टि के जीवन में प्रसन्नता नहीं आती।

(10) समुद्र– समुद्र से मैंने यह सीखा है कि मनुष्य को सर्वदा प्रसन्न एवं गम्भीर रहना चाहिये।[गप] उसका भाव अथाह, अपार और असीम होना चाहिये। समुद्र में ज्वार–भाटा की तरह हमारे जीवन में उतार–चढ़ाव आये तो हमें भी अविचलित रहना चाहिये। मनुष्य को भी सांसारिक पदार्थों की प्राप्ति से प्रफुल्लित नहीं होना चाहिये और न ही उनके घटने से उदास होना चाहिये।

(11) पतंगा– पतंगा रूप पर मोहित होकर आग के पास जाता है और उसमें जल मरता है, ऐसे ही इन्द्रियों को वश[गपप] में न रखने वाला पुरुष, स्त्री के सौन्दर्य को देखकर ऐसा मोहित हो जाता है कि जीवन का सर्वनाश कर लेता है। वासना व्यक्ति को पतित कर देती है। पतिंगे से मैंने यह शिक्षा ली कि रूप को वासनात्मक भाव से देखोगे तो पतित हो जाओगे। इसलिये अपनी दृष्टि को भक्तिभावपूर्ण बनाओ, सौन्दर्य में परमात्मा का रूप देखो और उसका आदर करो, सम्मान करो। ऐसा करोगे तो स्वयं का भी कल्याण होगा और संसार में भी मर्यादा एवं शान्ति बनी रहेगी।

(12) भ्रमर– मैंने भ्रमर से शिक्षा ली है कि– जैसे वह अलग–अलग फूलों से थोड़ा–थोड़ा रस लेकर संग्रह करता है, एक ही फूलपर बैठकर सब रस नहीं लेता, वैसे ही बुद्धिमान् पुरुष को सभी शास्त्रों का सार, उनका रस संग्रहित करना चाहिये। मनुष्य को भ्रमर की तरह आसक्त न बनना चाहिये।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

(13) मधुमक्खी– मधुमक्खी से संग्रह न करने की शिक्षा ली है।[गपपप] मधुमक्खी मधु का संग्रह करती है, परंतु उसे कोई और ही ले जाता है। अत धन–सम्पत्ति यदि मनुष्य के पास आ जाय तो उसे संग्रह करके नहीं रखना चाहिए, उसे समाज सेवा में जगाना चाहिए।

(14) हाथी– हाथी हथिनी के स्पर्श सुख के लिये पागल सा हो जाता है। हाथी को पकड़ने के लिये लोग बड़ा–सा गड्ढा खेदकर उसके ऊपर घास–फूस की एक हथिनी बनाकर खड़ी कर देते हैं। हाथी उस हथिनी को देखकर स्पर्श सुख के लिये दौड़ता हुआ जैसे ही उसके समीप आता है वह गड्ढे में गिर जाता है।

(15) हिरन– संगीत की मधुर ध्वनि पर मैंने हिरन को मरते देखा। इससे मैंने शिक्षा प्राप्त की कि मनुष्य को अश्लील गीतों[गपअ] में खोकर अपने स्वरूप, अपनी स्थिति को भूलकर पथच्युत एवं ध्येयच्युत नहीं होना चाहिए।

(16) मछली– काँटे से लगाया गया माँस खाने मछली आती है और काँटे में फँसकर मर जाती है। इस सुख की, जीभ के स्वाद की लालसा मछली को मारती है। अतः जिह्वा पर भी मनुष्य को नियन्त्रण रखना चाहिये।[गअ] स्वाद मनुष्य की कमजोरी है। जो व्यक्ति मन को जीतना चाहता है, जीवन में विकास करना चाहता है, उसे स्वाद को जीतना चाहिये।

(17) पिंगला वेश्या– वेश्या के जीवन से अवधूत ने यह शिक्षा ली कि धन की चिन्ता एवं धन का चिन्तन ही जीवन का सर्वस्व नहीं है और मानव–देह केवल वासनार्थ और भोगार्थ नहीं है। यह तो जीवन–विकासार्थ है।

(18) कुरर पक्षी (टिटिहरी)– कुरर पक्षी की भाँति संग्रहवृत्ति का त्याग करने से मनुष्य को भी सुख–शान्ति प्राप्त होती है।[गअप] इससे शिक्षा मिलती है कि वित्तवानों को, संग्रहकर्ताओं को अतिसंग्रहवृत्ति नही करनी चाहिए, ऐसा करने से समाज में असन्तुलन उत्पन्न होता है।

(19) बालक– मैंने बालक को अपने में ही मस्त, प्रसन्नचित्त खेलते हुए देखा। प्रसन्न रहने के लिये उसे किसी साधन की, किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है और वह अपने–आप में ही खुश रह सकता है। अतः मैं भी आत्मानन्द[गअपप] में ही रमता हूँ, स्वयं के साथ ही क्रीडा करता हूँ। भीतर की प्रसन्नता ही असली प्रसन्नता है। प्रसन्नता के सुरभित सुमन तो हमारे हृदय–कुंज में खिलते हैं।

(20) कुवाँरी कन्या– धान कूटते समय एक गरीब कन्या ने दोनों हाथों की चूड़ियाँ एक–एक करके उतार दीं। केवल एक–एक चूड़ी ही रहने दी। अब धान कूटते समय कोई आवाज नहीं आ रही थी। इससे यह शिक्षा मिलती है कि यदि मनुष्य को, संन्यासी को शान्ति चाहिये हो उसे अकेला ही रहना चाहिये। बहुत लोगों के साथ रहने से कलह–क्लेश की सम्भावना रहती है, यहाँ तक कि यदि दो व्यक्ति भी साथ रहते हैं तो उनमें संवाद होगा और कभी–कभी वह विवाद भी बन सकता है। अतः शान्ति के लिये एकान्त आवश्यक है।[गअपपप]

(21) बाण बनाने वाला– बाण बनाने वाले से शिक्षा मिली कि– कर्म की कुशलता एवं लक्ष्य की प्राप्ति के लिये एकाग्रता, तल्लीनता होना आवश्यक है।

(22) सर्प– सर्प से मैंने यह शिक्षा ली कि व्यक्ति को विशेषकर संन्यासी को अकेला ही रहना चाहिये।[गपग] लोगों के साथ रहने से साधना में व्यवधान पड़ता है, चिन्तन ठीक से नहीं हो पाता। जीवन में सांसारिक कर्म करते

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

हुए कुछ समय एकान्त में रहने की, विचरने की, चिन्तन करने की भी डालो। इससे संसार में अनासक्ति होती जायगी।

(23) मकड़ी– मकड़ी के समान परमात्मा अपनी माया से सृष्टि की रचना करते हैं, उसी में क्रीड़ा करते हैं और अन्त में उसे अपने में ही समेट लेते हैं। जगत की उत्पत्ति, स्थिति और संहार – सब ईश्वर की इच्छा से ही होता है।[गग] मनुष्य केवल निमित्तमात्र है। मनुष्य को अपने अहं एवं कर्तृत्वाभिमान को छोड़कर केवल कर्म करते रहना चाहिये। जो शान्ति एवं आनन्दपूर्वक जीवन जीने का यह मूल मन्त्र है।

(24) भृंगी कीट– भृंगी कीट से शिक्षा प्राप्त की है कि– मनुष्य जिस चीज का चिन्तन करता रहता है, वह वही हो जाता है, भले ही वह चिन्तन आसक्ति से करे या भयवश।[गगप] मनुष्य यदि विषयों का चिन्तन करेगा तो विषयी बन जाएगा और यदि सच्चिन्तन होगा तो उसका चरित्र एवं व्यवहार आदर्श बनेगा।

निष्कर्ष– अवधूत ने विविध गुरु बताकर मनुष्य को जीवन–विकास के मार्ग बताये हैं। ज्ञान केवल पुस्तकों में नहीं है। ज्ञान का वृहद् पुस्तकालय तो यह सृष्टि है, यह प्रकृति है; जहाँ से प्रतिपल, प्रतिक्षण व्यक्ति कुछ–न–कुछ शिक्षा प्राप्त कर सकता है। मनुष्य में सीखने की ललकभर होनी चाहिये, फिर वह सृष्टि की छोटी–से–छोटी इकाई और उसमें घट रही सामान्य–सी लगने वाली घटना से भी जीवन का बहुत श्रेष्ठ दर्शन पा सकता है। उसे ऐसे सूत्र एवं संकेत मिल सकते हैं, जो उसके जीवन को तेजस्विता, दिव्यता एवं भव्यता प्रदानकर जीते–जी मुक्ति की अनुभूति करा सकते हैं। इसमें वर्णित दत्तात्रेय के चौबीस गुरुओं की शिक्षाओं पर गम्भीर चिन्तन, मनन एवं अनुकरण करने से ही वह दिव्य सूत्र हस्तगत होंगे।

[प] नाहं तवाङ्घ्रिकमलं क्षणार्धमपि केशव । त्यक्तुं समुत्सहे नाथ स्वधाम नय मामपि।। –भागवत पुराण 11/6/43

[पप] अवधूतं द्विजं कञ्चिच्चरन्तमकुतोभयम् । कविं निरीक्ष्य तरुणं यदुः पप्रच्छ धर्मवित्।। –उद्धवगीता 1/25

[पपप] भूतैराक्रम्यमाणोऽपि धीरो दैववशानुगैः। तद् विद्वान्न चलेन्मार्गादन्वशिक्षं क्षितेर्व्रतम्।। –उद्धवगीता 1/37

[पअ] शश्वत्परार्थसर्वेहः परार्थैकान्तसम्भवः। साधुः शिक्षेत भूभृत्तो नगशिष्यः परात्मताम्।। –उद्धवगीता 1/38

[अ] पार्थिवेष्विह देहेषु प्रविष्टस्तद्गुणाश्रयः। गुणैर्न युज्यते योगी गन्धैर्वायुरिवात्मदृक्।। –उद्धवगीता 1/41

[अप] अन्तर्हितश्च स्थिरजंगमेषु ब्रह्मात्मभावेनसमन्वयेन। व्याप्त्याव्यवच्छेदमसंगमात्मनो मुनिर्नभस्त्वं विततस्य भावयेत्।। –उद्धवगीता 1/42

[अपप] स्वच्छः प्रकृतितः स्निग्धो माधुर्यस्तीर्थभूर्नृणाम्। मुनिः पुनात्यपां मित्रमीक्षोपस्पर्शकीर्तनैः।। –उद्धवगीता 1/44

[अपपप] तेजस्वी तपसा दीप्तो दुर्धर्षोदरभाजनः। सर्वभक्षोऽपि युक्तात्मा नादत्ते मलमग्निवत्।। –उद्धवगीता 1/45

[पग] विसर्गाद्याः श्मशानान्ता भावा देहस्य नात्मनः। कलानामिव चन्द्रस्य कालेनाव्यक्तवर्त्मना।। –उद्धवगीता 1/48

[ग] गुणैर्नुणानुपादत्तं यथाकालं विमुच्यति। न तेषु युज्यते योगी गोभिर्गा इव गोपतिः।। –उद्धवगीता 1/50

[गप] मुनिः प्रसन्नगम्भीरो दुर्विगाह्यो दुरत्ययः। अनन्तपारो ह्यक्षोभ्यः स्तिमितोद इवार्णवः।। –उद्धवगीता 2/5

[गपप] दृष्ट्वा स्त्रियं देवमायां तद्भावैरजितेन्द्रियः। प्रलोभितः पतत्यन्धे तमस्यग्नौ पतंगवत्।। –उद्धवगीता 2/7

[गपपप] सायन्तनं श्वसतनं वा न संगृह्णीत भिक्षितम्। पाणिपात्रोदरामत्रो मक्षिकेव न सङ्ग्रही।। –उद्धवगीता 2/11

[गपअ] ग्राम्यगीतं न श्रृणुयाद् यतिर्वनचरः क्वचित्। शिक्षेत हरिणाद् बद्धान्मृगयोर्गीतमोहितात्।। –उद्धवगीता 2/17

[गअ] तावज्जितेन्द्रियो न स्याद् विजितान्येन्द्रियः पुमान्। न जयेद् रसनं याजज्जितं सर्वं जिते रसे।। –उद्धवगीता 2/21

[गअप] सामिशं कुररं जघ्नुर्बलिनो ये निरामिषाः। तदामिषं परित्यज्य स सुखं समाविन्दत।। –उद्धवगीता 3/2

[गअपप] न मे मानावमानौ स्तो न चिन्ता गेहपुत्रिणाम्। आत्मक्रीड आत्मरतिर्विचरामीह बालवत्।। –उद्धवगीता 3/3

[गअपपप] वासे बहूनां कलहो भवेद् वार्ता द्वयोरपि। एक एव चरेत्तस्मात् कुमार्या इव कंकणः।। –उद्धवगीता 3/10

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

[गपग] एकचार्यनिकेतः स्यादप्रमत्तो गुहाशयः। अलक्ष्यमाण आचारैर्मुनिनेकोऽल्पभाषणः।। –उद्धवगीता 3/14

[गग] यथोर्णनाभिर्हृदयादूर्णां सन्तत्य वक्त्रतः। तया विहृत्य भूयस्तां ग्रसत्येवं महेश्वरः।। –उद्धवगीता 3/21

[गगप] कीटः पेशस्कृतं ध्यायन् कुड्यां तेन प्रवेशितः। याति तत्सात्मतां राजन् पूर्वरूपमसन्त्सजन्।। –उद्धवगीता 3/23